अडवाइजरी 2024

लीची को 'स्टिंक बग' कीट के साथ-साथ 'फ्लावर वेबर' कीट एवं 'मंजर झुलसा रोग' से बचाव करने का समय, प्रबंधन के लिये दवाओं का छिड़काव जरूरी

लीची के बागों में पिछले वर्ष की भाँति इस बार भी लीची के मंजर एवं फलों को चट करने वाला स्टिंक बग नामक नाशीकीट (*टेस्सारोटोमा जावानिका* प्रजाति) के हमले का समय आ गया है। कुछ किसानों के लीची के पेड़ पर स्टिंक बग कीट का प्रकोप होने लगा है। अगर अभी से इसके बचाव को लेकर सावधान नहीं हुए तो भारी क्षति उठानी पड़ सकती है। साथ ही फूल खिलने से पहले 'फ्लावर वेब'र कीट एवं 'मंजर झुलसा' रोग से बचाव के लिए प्रबंधन पर ध्यान देने का भी वक़्त आ गया है। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र, मुजफ्फरपुर के निदेशक, डॉ. बिकाश दास ने खासकर स्टिंक बग कीट से बचाव के लिए किसानों को सामूहिक प्रयास आरंभ करने की सलाह दी है।

लीची स्टिंक बग कीट से होनेवाले नुकसान: कीट के नवजात और वयस्क दोनों ही खाऊ-रूप से पौधों के ज्यादातर कोमल हिस्सों जैसे कि बढ़ती कलियाँ, पत्तियाँ, पत्तीवृंत, पुष्पक्रम, विकसित होते फलों के डंठल और लीची के पेड़ की कोमल शाखाओं पर जीवन निर्वाह करते हैं। कीट के अत्यधिक रस चूसने से बढ़ती कलियाँ और कोमल अंकुर सूख जाती हैं और फल काले पड़ जाते हैं। रस चूसने के परिणामस्वरूप फूल और फल गिरते हैं। इस कीट के सुषुप्तावस्था में पड़े वयस्क जनवरी के अंतिम सप्ताह में सक्रिय हो जाते हैं और लीची के अन्य पेड़ों पर फैलना शुरू कर देते हैं जो लीची की शाही किस्म में मंजर निकलने के समय से मेल खाता है। मंजर निकलने के साथ ही साथ वयस्कों का संभोग फरवरी के पहले सप्ताह से शुरू होता है। वयस्कों का झुण्ड लीची के पौधों पर फरवरी के पहले सप्ताह से शुरू होता है, और फरवरी के दूसरे सप्ताह के दौरान अंडे का समूह नवोदित पत्तियों की निचली सतह पर देखा जा सकता है। मादा बग गोलाकार और हल्के गुलाबी रंग के अंडे, ज्यादातर चौदह के झुण्ड में पत्तियों की निचली सतह पर देती है।

'फ्लावर वेबर' कीट: पिछले 2-3 सालों में बिहार में इस फसल के लिए बड़ी आर्थिक क्षति पंहुचानेवाला कीट के रूप में उभरकर सामने आई है। इसके प्रकोप की शुरुआत मंजर निकलते ही (फरवरी-मार्च) हो जाती है जो मंजर और बढ़ते फलों को खाते हैं। इस कीट की केटरपिलर(पिल्लू) विकसित होती फूल की कलियों को खाना शुरू करते हैं। धीरे-धीरे पुष्पक्रम के सारे कलियों और विकसित होते फूलों को पिल्लू रेशमी जाले में लपेटकर गैलरी बनाकर अंदर रहते और खाते हैं। वे पुष्पक्रम के डंठल में भी छेद कर देते हैं। कीट के अत्यधिक प्रकोप से पूरे वृक्ष के मंजर झुलसे हुये प्रतीत होते हैं जैसे मंजर झुलसा रोग लग गया हो।

मंजर झुलसा रोग: इसे स्थानीय किसान 'सुरका रोग' के नाम से भी जानते हैं। इसके रोगकारक मंजरों को झुलसा देते हैं जिससे प्रभावित मंजरों में कोई फल नहीं लग पाते। ऐसे मंजर देखने में सूर्य-किरणों से जली हुई प्रतीत होती है।

लीची की स्टिंक बग कीट

बचाव के लिये क्या करें:

वर्तमान प्रबंधन रणनीतियाँ कीटनाशक एवं फफूँदनाशक दवाओं के छिड़काव (स्प्रे) पर निर्भर हैं। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र, मुजफ्फरपुर द्वारा अनुशंसित निम्नलिखित में से किसी भी कीटनाशक संयोजन का दो छिडकाव करें। शाही किस्म के पेड़ों पर पहला छिड़काव 3 से 10 फरवरी के बीच और दूसरा स्प्रे 18 से 25 फरवरी के बीच करें।

प्रथम छिड़काव:

- लैम्ब्डा साइहेलोथ्रिन 5% ईसी (1.0 मिली/लीटर) + क्लोरफेनापायर 10% ईसी (1.0 मिली/लीटर) प्रति लीटर पानी, या
- लैम्ब्डा साइहेलोथ्रिन 5% ईसी (1.0 मिली/लीटर) + डाइमेथोएट 30% ईसी (1.5 मिली/लीटर) प्रति लीटर पानी, या
- थियाक्लोप्रिड 21.7% SC (0.5 मिली/ली) + फिप्रोनिल 5% एससी(1.0 मिली/ली) प्रति लीटर पानी, या
- थियाक्लोप्रिड 21.7% SC (0.5 मिली/ली) + प्रोफेनफॉस 50% ईसी (1.5 मिली/ली) प्रति लीटर पानी

जब कीटनाशक छिड़काव किया जाये, तो जहां तक संभव हो जमीन पर गिरे हुए कीटों को झाड़ू से इकट्ठा किया जाना चाहिए और यांत्रिक (मैन्युअल) रूप से एक गड्ढे में डालकर और मिट्टी से ढँककर नष्ट कर देना चाहिए।

दूसरा छिड़काव: उपार्लिखित कीटनाशक दवाओं के किसी एक संयोजन के साथ-साथ मंजर झुलसा रोग से बचाव हेतु फफूँदनाशक थायोफेनेट मिथाइल 75% डबल्यूपी 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल में मिलाकर छिड़काव करें ।

घोल में स्टीकर का इस्तेमाल 0.4 मिली/लीटर की दर से करें। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए केन्द्र के निदेशक डॉ बिकाश दास (फोन 9431813884) या संबन्धित वैज्ञानिक से संपर्क किया जा सकता है।